चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	23.05.2020	04	02-06

नुकसान से बचाव की सलाह • एचएयू के कीट विज्ञान विभाग ने टिड्डी दल से सुरक्षा के बारे दिए सतर्कतापूर्वक सुझाव

टिड्डियों का झुंड दिखे तो ढोल बजाकर फसलों पर बैठने से रोकें

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि के कुलपति प्रो. केपी सिंह के कुशल व योग्य मार्गदर्शन में कीट विज्ञान विभाग ने किसानों को टिड्डी दल से सुरक्षा संबंधित महत्वपूर्ण सुझाव दिए। टिड्डियां छोटे एंटिना वाली तथा प्रवासी आदत की होती हैं। ये टिड्डियां अकेले-2 या झुंड में रहती हैं तथा बहुभक्षी होती हैं। व्यस्क मादा टिड्डियां नमी युक्त रेतीली मिट्टियों में 10-15 सैं.मी. की गहराई पर समूह में अण्डे देती हैं। इन अण्डों से शिशु टिड्डियां सामान्यता 2 सप्ताह में निकल आती हैं। इस अवस्था में ये टिड्डियां सामान्यता 6 सप्ताह तक रहती हैं तथा आसपास मौजूद वनस्पतियों को नष्ट कर देती हैं। शिशु टिड्डियों के पंख नहीं होते अतः ये उड़ नहीं सकती। व्यस्क अपरिपक्व टिड्डियां गुलाबी रंग की तथा इनके पंख निकल आते हैं अतः ये दल या झुंड बनाकर उड़ने में सक्षम होती हैं। इस अवस्था में सामान्यता 4 सप्ताह तक रही है। झुंड में टिड्डियां हजारों से लेकर लाखों की संख्या तक हो सकती हैं। ये झुंड दिन के समय 12 से 16 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से 150 किलोमीटर तक की दूरी तय कर सकते हैं। ये झुंड रात के समय विभिन्न वनस्पतियों पर बैठ जाते हैं तथा अधिक से अधिक क्षति पहुंचाते हैं। इन टिड्डियों का रंग जब गहरा भूरा या पीला होने लगे तो ये परिपक्व व्यस्क बन जाती हैं जो अण्डे देने में सक्षम होती हैं। अण्डे देने की स्थिति आने पर ये टिड्डियां 2-3 दिनों तक उड़ नहीं पाती।

फसलों में क्षति की दृष्टि से इन टिड्डियों की संख्या 10000 टिड्डियां प्रति हेक्टेयर या 5-6 टिड्डियां प्रति झाड़ी आंकी है। टिड्डियों की संख्या इससे अधिक होने पर कीटनाशक दवाइयों के छिड़काव की जरूरत पड़ती है। हमारे सीमावर्ती राज्य में इन टिड्डियों के झुंड पाए गए हैं तथा इनके नियंत्रण का कार्य लगातार किया जा रहा है।

इन बातों का रखें ख्याल

- हमारे राज्य में टिड्डियों के झुंड के प्रवेश करने की संभावना कम है परन्तु सचेत रहकर आपसी सहयोग करें।
- टिड्डियों के झुंड के दिखाई देने पर ढोल या ड्रम बजाकर इन्हें फसलों पर बैठने से रोका जा सकता है।
- टिड्डियों की फसल में उपस्थिति या आसपास के इलाकों में प्रवेश की जानकारी नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि विभाग अधिकारी या कीट विज्ञान विभाग, एचएयू, हिसार को तुरन्त दी जाए।
- रेतीले टिब्बों/इलाकों में अगर टिड्डियों के झुंड (पीले रंग की टिड्डियां) जमीन पर बैठी दिखाई दें तो उस स्थान को चिह्नित कर तुरन्त सूचित करें।
- टिड्डियां अगर झुंड में न होकर अलग-2 हैं तथा इनकी संख्या कम है तो घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है।
- अनावश्यक कीटनाशकों का प्रयोग फसलों पर न करें।
- सोशल मीडिया पर टिड्डी दल के बारे में अनावश्यक खबरें न फलाएं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	23.05.2020	03	03-07

जागरूकता | किसानों को सता रही टिड्डी दल की चिंता, एचएयू ने सुरक्षा के दिए सुझाव

पड़ोसी राज्यों से आ सकती हैं टिड्डी, किसान रहें अलर्ट

जागरण संवाददाता, हिसारः किसानों को टिड्डी दल के आने की चिंता सता रही है। मगर किसान कुछ उपायों के माध्यम से इस समस्या से निजात पा सकते हैं। राजस्थान व पंजाब की सीमाओं से लगे होने के कारण हिसार और सिरसा टिड्डी को लेकर अलर्ट पर हैं। यहां विभाग लगातार सूचना देने की बात कह रहे हैं। इस कड़ी में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग ने किसानों को टिड्डी दल से सुरक्षा संबंधित महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं। उन्होंने बताया कि टिड्डियां छोटे एंटिना वाली तथा प्रवासी आदत की होती हैं। टिड्डियां अकेले या झुंड में रहती हैं, बहुभक्षी होती हैं। व्यस्क मादा टिड्डियां नमी युक्त रेतीली मिट्टियों में 10-15 सेंटी मीटर की गहराई पर अण्डे देती हैं।

150 किलोमीटर तक की दूरी तय कर लेती हैं टिड्डियां

झुंड में टिड्डियां हजारों से लेकर लाखों की संख्या तक हो सकती हैं। यह झुंड दिन के समय 12 से 16 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से 150 किलोमीटर तक की दूरी तय कर सकते हैं। ये झुंड रात के समय विभिन्न वनस्पतियों पर बैठ जाते हैं तथा अधिक से अधिक क्षति पहुंचाते हैं। इन टिड्डियों का रंग जब गहरा भूरा या पीला होने लगे तो यह परिपक्व व्यस्क बन जाती हैं जो अण्डे देने में सक्षम होती हैं। इस स्थिति में ये टिड्डियां 2-3 दिनों तक उड़ नहीं पाती।

टिड्डी दल के नियंत्रण के लिए सिफारिश किए गए कीटनाशक

कीटनाशक	मात्रा प्रति हेक्टेयर
• क्लोरपायरिफास	20 फीसद ईसी 1.2 लीटर
• क्लोरपायरिफास	50 फीसद ई.सी. 480 मिली लीटर
• मैलाथियान	50 फीसद ई.सी. 1.85 लीटर
• मैलाथियान	25 फीसद डब्ल्यू पी. 3.7 किलो ग्राम
• डैल्टामैथरिन	2.8 फीसद ई.सी. 450 मिली लीटर
• फिपरोनिल	5 फीसद एस.सी. 125 मिली लीटर
• फिपरोनिल	2.8 फीसद ई.सी. 225 मिली लीटर
•लैम्डा-साइहैलोथ्रीन	5 फीसद ई.सी. 400 मिली लीटर
•लैम्डा-साइहैलोथ्रीन	10 फीसद डब्ल्यू पी. 200 ग्राम

जिले को सतर्क रहने की आवश्यकता

फसलों में क्षति की दृष्टि से इन टिड्डियों की संख्या 10 हजार टिड्डियां प्रति हेक्टेयर या 5-6 टिड्डियां प्रति झाड़ी आंकी गई हैं। टिड्डियों की संख्या इससे अधिक होने पर कीटनाशक दवाइयों के छिड़काव की जरूरत पड़ती है।

टिड्डियां आने पर इन बातों का रखें ध्यान

- हमारे राज्य में टिड्डियों के झुंड के प्रवेश करने की संभावना कम है परन्तु सचेत रहकर आपसी सहयोग करें।
- टिड्डियों के झुंड के दिखाई देने पर ढोल या ड्रम बजाकर इन्हें फसलों पर बैठने से रोका जा सकता है।
- टिड्डियों की फसल में उपस्थिति या आसपास के इलाकों में प्रवेश की जानकारी नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि विभाग अधिकारी या कीट विज्ञान विभाग, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार को तुरन्त दी जाए।
- रेतीले टिब्बों, इलाकों में अगर टिड्डियों के झुंड (पीले रंग की टिड्डियां) जमीन पर बैठी दिखाई दे तो उस स्थान को चिन्हित कर तुरन्त सूचित करें।
- टिड्डियां अगर झुंड में न होकर अलग-2 हैं तथा इनकी संख्या कम है तो घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	23.05.2020	03	06-08

हकृवि की किसानों को सलाह

ढोल या ड्रम बजाकर खेतों से भगाएं टिड्डी दल को

हिसार, 22 मई (निस)

टिड्डी दल आने का खतरा भांपते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा किसानों के लिए बचाव के सुझाव जारी किए गए हैं। विश्वविद्यालय का मानना है कि हरियाणा में टिड्डी दल का आना न के बराबर है, लेकिन ऐसा होने पर किसान ढोल व ड्रम बजाकर टिड्डी दल का फसलों पर बैठने से रोक सकते हैं। टिड्डी दल से

किसानों को किया सतर्क

बचाव की जानकारी किसानों को देते हुए हकृवि के कीट विज्ञान विभाग ने बताया कि यूं तो हरियाणा मे टिड्डी दल आने की संभावना बहुत ही कम है, लेकिन हिसार व सिरसा के किसानों का सतर्क रहने की आवश्यकता है। विभाग ने बताया कि टिड्डियां सामान्यता 6 सप्ताह तक रहती हैं तथा आसपास मौजूद वनस्पतियों को नष्ट कर देती हैं, जिसके लिए टिड्डियों की संख्या अधिक होने पर कीटनाशक का छिड़काव करें।

ये दिए सुझाव

- टिड्डियों की फसल में उपस्थिति या आसपास के इलाकों में प्रवेश की जानकारी कृषि विभाग को दें।
- रेतीले टिब्बों या इलाकों में अगर टिड्डियों के झुंड जमीन पर दिखाई दें तो उस स्थान को तुरंत चिन्हित करें। अनावश्यक कीटनाशकों का प्रयोग फसलों पर न करें।
- जरूरी हो तो क्लोरपायरिफास, मेलाथियान, डेल्टामेथरिन, फिप्रोनिल आदि कीटनाशकों का प्रयोग कृषि विशेषज्ञों की सलाह पर करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	23.05.2020	03	05-06

फसल में टिड्डियां मिलने पर तुरंत विभाग को दें सूचना : एचएयू

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कीट विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों के अनुसार हमारे सीमावर्ती राज्य में टिड्डियों के झुंड मिले हैं। इनके नियंत्रण का कार्य लगातार किया जा रहा है। सीमावर्ती राज्य होने कारण प्रदेश के किसानों (खासकर हिसार व सिरसा जिला के) को सतर्क रहने की आवश्यकता है। वैज्ञानिकों ने किसानों को टिड्डी दल से सुरक्षा संबंधित महत्वपूर्ण सुझाव दिए है।

किसान टिड्डियों का झुंड दिखाई देने पर ढोल या ड्रम बजाकर इन्हें फसलों पर बैठने से रोकें। टिड्डियों की फसल में उपस्थिति या आसपास के इलाकों में प्रवेश की जानकारी नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि विभाग अधिकारी या एचएयू को तुरंत दें। रेतीले टिब्बों/इलाकों में अगर टिड्डियों के झुंड (पीले रंग की टिड्डियां) जमीन पर बैठी दिखाई दे तो उस स्थान को चिन्हित कर तुरंत सूचित करें । अनावश्यक कीटनाशकों का प्रयोग फसलों पर न करें।

टिड्डी दल के नियंत्रण के लिए इन कीटनाशकों का करें इस्तेमाल

- क्लोरपायरिफास 20 प्रतिशत ईसी, 1.2 लीटर प्रति हेक्टेयर
- क्लोरपायरिफास 50 प्रतिशत ईसी, 480 मिली लीटर प्रति हेक्टेयर
- मैलाथियान 50 प्रतिशत ईसी, 1.85 लीटर प्रति हेक्टेयर
- मैलाथियान 25 प्रतिशत डब्ल्यूपी, 3.7 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर
- डेल्टामैथरिन 2.8 प्रतिशत ईसी, 450 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर
- फिपरोनिल 5 प्रतिशत एससी, 125 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर
- फिपरोनिल 2.8 प्रतिशत ईसी, 225 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर
- लैम्डा-साइहैलोथ्रीन 5 प्रतिशत ईसी, 400 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर
- लैम्डा-साइहैलोथ्रीन 10 प्रतिशत डब्ल्यूपी, 200 ग्राम प्रति हेक्टेयर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार–पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	22.05.2020	03	02-03

हकृवि के कीट विज्ञान विभाग ने टिड्डी दल से सुरक्षा के बारे दिए सतर्कतापूर्वक अत्यावश्यक सुझाव

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केपी सिंह के कुशल व योगय मार्गदर्शन में कीट विज्ञान विभाग ने किसानों को टिड्डी दल से सुरक्षा संबंधित महत्वपूर्ण सुझाव दिए। टिड्डियां छोटे एंटिना वाली तथा प्रवासी आदत की होती हैं। ये टिड्डियां अकेले-2 या झुंड में रहती हैं तथा बहुभक्षी होती हैं । व्यस्क मादा टिड्डियां नमी युक्त रेतीली मिट्टियों में 10-15 सें.मी. की गहराई पर समूह में अण्डे देती हैं। इन अण्डों से शिशु टिड्डियां सामान्यता 2 सप्ताह में निकल आती हैं। इस अवस्था में ये टिड्डियां सामान्यता 6 सप्ताह तक रहती हैं तथा आसपास मौजूद वनस्पतियों को नष्ट कर देती हैं। शिशु टिड्डियों के पंख नहीं होते अतः ये उड़ नहीं सकती। व्यस्क अपरिपक्व टिड्डियां गुलाबी रंग की तथा इनके पंख निकल आते हैं अतः ये दल या झुंड बनाकर उड़ने में सक्षम होती हैं इस अवस्था में सामान्यता 4 सप्ताह तक रही है। झुंड में टिड्डियां हजारों से लेकर लाखों की संख्या तक हो सकती है । ये झुंड दिन के समय 12 से 16 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफतार से 150 किलोमीटर तक की दूरी तय कर सकते हैं। ये झुंड रात के समय विभिन्न वनस्पतियों पर बैठ जाते हैं तथा अधिक से अधिक क्षति पहुंचाते हैं । इन टिड्डियों का रंग जब गहरा भूरा या पीला होने लगे तो ये परिपक्व व्यस्क बन जाती हैं जो अण्डे देने में सक्षम होती हैं । अण्डे देने की स्थिति आने पर ये टिड्डियां 2-3 दिनों तक उड़ नहीं पाती। फसलों में क्षति की दृष्टि से इन टिड्डियों की संख्या 10000 टिड्डियां प्रति हेक्टेयर या 5-6 टिड्डियां प्रति झाड़ी आंकी गई है। टिड्डियों की संख्या इससे अधिक होने पर कीटनाशक दवाइयों के छिड़काव की जरूरत पड़ती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	22.05.2020	03	01-03

हकृवि के कीट विज्ञान विभाग ने टिड्डी दल से सुरक्षा के बारे दिए सतर्कतापूर्वक अत्यावश्यक सुझाव

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 23 मई : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह के कुशल व योगय मार्गदर्शन में कीट विज्ञान विभाग ने किसानों को टिड्डी दल से सुरक्षा संबंधित महत्वपूर्ण सुझाव दिए। टिड्डियां छोटे एंटिना वाली तथा प्रवासी आदत की होती हैं। ये टिड्डियां अकेले-2 या झुंड में रहती हैं तथा बहुभक्षी होती हैं। व्यस्क मादा टिड्डियां नमी युक्त रेतीली मिट्टियों में 10-15 सें.मी. की गहराई पर समूह में अण्डे देती हैं। इन अण्डों से शिशु टिड्डियां सामान्यता 2 सप्ताह में निकल आती हैं। इस अवस्था में ये टिड्डियां सामान्यता 6 सप्ताह तक रहती हैं तथा आसपास मौजूद वनस्पतियों को नष्ट कर देती हैं । शिशु टिड्डियों के पंख नहीं होते अत: ये उड़ नहीं सकती। व्यस्क अपरिपक्व टिड्डियां गुलाबी रंग की तथा इनके पंख निकल आते हैं अत: ये दल या झुंड बनाकर उड़ने में सक्षम होती हैं इस अवस्था में सामान्यता 4 सप्ताह तक रही है। झुंड में टिड्डियां हजारों से लेकर लाखों की संख्या तक हो सकती है । ये झुंड दिन के समय 12 से 16 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से 150 किलोमीटर तक की दूरी तय कर सकते हैं। ये झुंड रात के समय विभिन्न वनस्पतियों पर बैठ जाते हैं तथा अधिक से अधिक क्षति पहुंचाते हैं । इन टिड्डियों का रंग जब गहरा भूरा या पीला होने लगे तो ये परिपक्व व्यस्क बन जाती हैं जो अण्डे देने में सक्षम होती हैं । अण्डे देने की स्थिति आने पर ये टिड्डियां 2-3 दिनों तक उड़ नहीं पाती। फसलों में क्षति की दृष्टि से इन टिड्डियों की संख्या 10000 टिड्डियां प्रति हेक्टेयर या 5-6 टिड्डियां प्रति झाड़ी आंकी गई है। टिड्डियों की संख्या इससे अधिक होने पर कीटनाशक दवाइयों के छिड़काव की जरूरत पड़ती है। हमारे सीमावर्ती राज्य में इन टिड्डियों के झुंड पाये गये हैं तथा इनके नियंत्रण का कार्य लगातार किया जा रहा है। सीमावर्ती राज्य होने के नाते हरियाणा के किसान भाइयों (खासकर हिसार व सिरसा जिला के) को सतर्क रहने की आवश्यकता है । किसान भाइयों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं। हमारे राज्य में टिड्डियों के झुंड के प्रवेश करने की संभावना कम है परन्तु सचेत रहकर आपसी सहयोग करें। टिड्डियों के झुंड के दिखाई देने पर ढोल या ड्रम बजाकर इन्हें फसलों पर बैठने से रोका जा सकता है। टिड्डियों की फसल में उपस्थिति या आसपास के इलाकों में प्रवेश की जानकारी नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि विभाग अधिकारी या कीट विज्ञान विभाग, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार को तुरन्त दी जाए। रेतीले टिब्बों / इलाकों में अगर टिड्डियों के झुंड (पीले रंग की टिड्डियां) जमीन पर बैठी दिखाई दे तो उस स्थान को चिन्हित कर तुरन्त सूचित करें। टिड्डियां अगर झुंड में न होकर अलग-2 हैं तथा इनकी संख्या कम है तो घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। अनावश्यक कीटनाशकों का प्रयोग फसलों पर न करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (यूनिक हरियाणा)	22.05.2020	---	---

H.A.U के कीट विज्ञान विभाग ने टिड्डी दल से सुरक्षा के बारे दिए सतर्कतापूर्वक अत्यावश्यक सुझाव

May 22, 2020 - Rakesh - Haryana News

यूनिक हरियाणा हिसार: 22 मई

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह के कुशल व योगय मार्गदर्शन में कीट विज्ञान विभाग ने किसानो को टिड्डी दल से सुरक्षा संबंधित महत्वपूर्ण सुझाव दिए । टिड्डियां छोटे एंटिना वाली तथा प्रवासी आदत की होती हैं। ये टिड्डियां अकेले-2 या झुंड में रहती हैं तथा बहुभक्षी होती हैं । व्यस्क मादा टिड्डियां नमी युक्त रेतीली मिट्टियों में 10-15 सें.मी. की गहराई पर समूह में अण्डे देती हैं। इन अण्डों से शिशु टिड्डियां सामान्यता 2 सप्ताह में निकल आती हैं। इस अवस्था में ये टिड्डियां सामान्यता 6 सप्ताह तक रहती हैं तथा आसपास मौजूद वनस्पतियों को नष्ट कर देती हैं । शिशु टिड्डियों के पंख नहीं होते अत: ये उड़ नहीं सकती। व्यस्क अपरिपक्व टिड्डियां गुलाबी रंग की तथा इनके पंख निकल आते हैं अत: ये दल या झुंड बनाकर उडने में सक्षम होती हैं इस अवस्था में सामान्यता 4 सप्ताह तक रही है। झुंड में टिड्डियां हजारों से लेकर लाखों की संख्या तक हो सकती है । ये झुंड दिन के समय 12 से 16 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफतार से 150 किलोमीटर तक की दूरी तय कर सकते हैं। ये झुंड रात के समय विभिन्न वनस्पतियों पर बैठ जाते हैं तथा अधिक से अधिक क्षति पहुंचाते हैं । इन टिड्डियों का रंग जब गहरा भूरा या पीला होने लगे तो ये परिपक्व व्यस्क बन जाती हैं जो अण्डे देने में सक्षम होती हैं । अण्डे देने की स्थिति आने पर ये टिड्डियां 2-3 दिनों तक उड़ नहीं पाती।

फसलों में क्षति की दृष्टि से इन टिड्डियों की संख्या 10000 टिड्डियां प्रति हेक्टेयर या 5-6 टिड्डियां प्रति झाड़ी आंकी गई है। टिड्डियों की संख्या इससे अधिक होने पर कीटनाशक दवाइयों के छिड़काव की जरूरत पड़ती है। हमारे सीमावर्ती राज्य में इन टिड्डियों के झुंड पाये गये हैं तथा इनके नियंत्रण का कार्य लगातार किया जा रहा है। सीमावर्ती राज्य होने के नाते हरियाणा के किसान भाइयों (खासकर हिसार व सिरसा जिला के) को सतर्क रहने की आवश्यकता है । किसान भाइयों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं ।

1. हमारे राज्य में टिड्डियों के झुंड के प्रवेश करने की संभावना कम है परन्तु सचेत रहकर आपसी सहयोग करें ।
2. टिड्डियों के झुंड के दिखाई देने पर ढोल या इम बजाकर इन्हें फसलों पर बैठने से रोका जा सकता है।
3. टिड्डियों की फसल में उपस्थिति या आसपास के इलाकों में प्रवेश की जानकारी नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि विभाग अधिकारी या कीट विज्ञान विभाग, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार को तुरन्त दी जाए ।
4. रेतीले टिब्बों / इलाकों में अगर टिड्डियों के झुंड (पीले रंग की टिड्डियां ०) जमीन पर बैठी दिखाई दे तो उस स्थान को चिन्हित कर तुरन्त सूचित करें ।
5. टिड्डियां अगर झुंड में न होकर अलग-2 हैं तथा इनकी संख्या कम है तो घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है।
6. अनावश्यक कीटनाशकों का प्रयोग फसलों पर न करें ।
7. सोशल मीडिया पर टिड्डी दल के बारे में अनावश्यक खबरें न फलायें ।

एफ.ए.ओ. द्वारा टिड्डी दल के नियंत्रण के लिए सिफारिश किए गए कीटनाशक इस प्रकार हैं:

क्रमांक कीटनाशक का नाम मात्रा प्रति हैक्टर
1. क्लोरपायरिफास 20 प्रतिशत ई.सी. 1.2 लीटर
2. क्लोरपायरिफास 50 प्रतिशत ई.सी. 480 मिली लीटर
3. मैलाथियान 50 प्रतिशत ई.सी. 1.85 लीटर
4. मैलाथियान 25 प्रतिशत डब्ल्यू पी. 3.7 किलो ग्राम
5. डैल्टामैथरिन 2.8 प्रतिशत ई.सी. 450 मिली लीटर
6. फिपरोनिल 5 प्रतिशत एस.सी. 125 मिली लीटर
7. फिपरोनिल 2.8 प्रतिशत ई.सी. 225 मिली लीटर
8. लैम्डा-साइहैलोथीन 5 प्रतिशत ई.सी. 400 मिली लीटर
9. लैम्डा-साइहैलोथीन 10 प्रतिशत डब्ल्यू पी. 200 ग्राम